आज़ादी की कीमत

देवंशी केडिया
कक्षा- द्वादश, वर्ग- ग

सरहद पर जाते जाते, उसनेअपनी माँ का हाथ थामकर कहा, “या तो तेरे बुढ़ापे में तेरा सहारा बन कर खड़ी रहूँगी, या तुझे इतनी इज्जत देकर जाऊँगी कि इस देश की हर संतान तुझे अपनी माँ माने।”

कुछ ही दिनों बाद किसी ने उस बेटी के पीठ पर वार कर, अपनी माँ के चेहरे पर कालिख पोत दी।

“वतन से मुहब्बत कुछ इस तरह निभा गयी, मुहब्बत के दिन, अपनी जान लूटा गयी।”

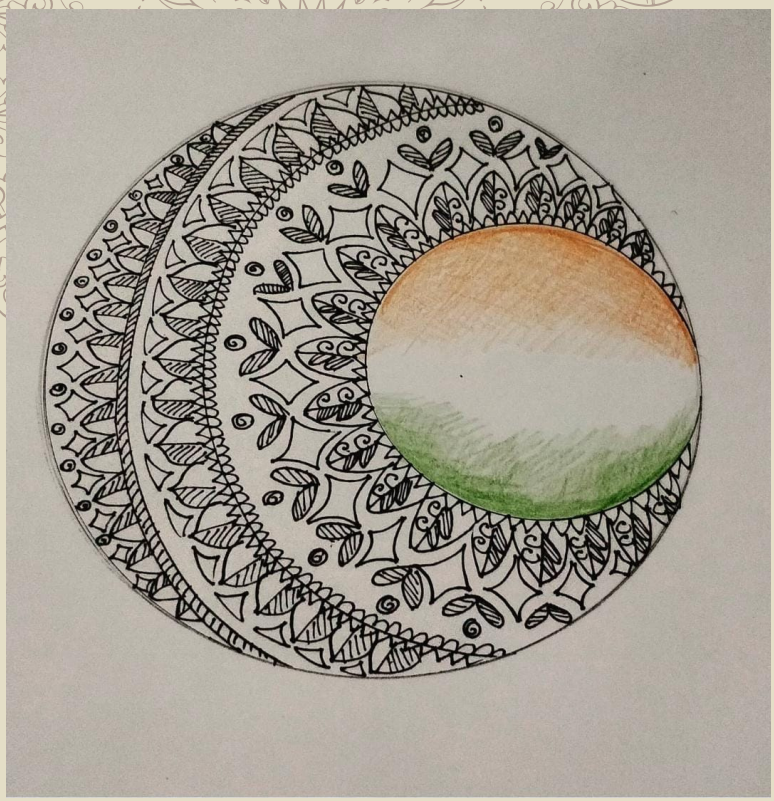

Urvi Jain
IGCSE Class 9